नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

अफवाहों से सचेत रहने की जरूरत

मध्य प्रदेश सहित देश के कई हिस्सों में पिछले कुछ दिनों से पेट्रोल पंपों पर असामान्य भीड़ और लंबी कतारें एक नए तरह के 'संकट' का संकेत दे रही हैं. इंदौर, भोपाल और ग्वालियर जैसे शहरों में हालात ऐसे बन गए कि सड़कों पर ट्रैफिक तक प्रभावित हुआ. लेकिन इस पूरे घटनाक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह संकट वास्तविक कमी का नहीं, बल्कि अफवाहों और मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया का परिणाम है. सोशल मीडिया पर फैली ईंधन की कमी की अपुष्ट खबरों ने लोगों के मन में भय पैदा कर दिया. यह भय इतनी तेजी से फैला कि देखते ही देखते 'पैनिक बाइंग' की स्थिति बन गई. लोग अपनी गाड़ियों की टंकियां फुल कराने के साथ-साथ बोतलों और डिब्बों में भी पेट्रोल भरवाने लगे. परिणामस्वरूप, जिन पेट्रोल पंपों पर सामान्य दिनों में पर्याप्त स्टॉक रहता था, वहां भी कुछ समय के लिए ईंधन खत्म होने की स्थिति बन गई. यह एक क्लासिक उदाहरण है कि कैसे अफवाहें वास्तविकता को प्रभावित कर सकती हैं.

आंकड़े बताते हैं कि कई शहरों में ईंधन की खपत सामान्य से दो से तीन गुना तक बढ़ गई. यह वृद्धि किसी औद्योगिक या परिवहन मांग के कारण नहीं, बल्कि सामूहिक घबराहट का नतीजा है. जब हजारों लोग एक साथ पेट्रोल पंपों पर पहुंचते हैं, तो आपूर्ति श्रृंखला पर दबाव पड़ना स्वाभाविक है. टैंकरों की आपूर्ति और पंपों की रिफिलिंग एक निश्चित प्रक्रिया के तहत होती है, जिसे अचानक बढ़ी मांग के अनुरूप तुरंत बढ़ाना संभव नहीं होता. यही कारण है कि अस्थायी अव्यवस्था को लोग स्थायी संकट समझ बैठते हैं. सरकार और प्रशासन ने इस स्थिति को लेकर स्पष्ट रुख अपनाया है. पेट्रोलियम मंत्रालय ने साफ कहा है कि देश में पेट्रोल, डीजल और एलपीजी का पर्याप्त भंडार उपलब्ध है. आपूर्ति श्रृंखला पूरी तरह सक्रिय है और कहीं भी वास्तविक कमी नहीं है. इसके बावजूद, अफवाहों की ताकत इतनी अधिक है कि सरकारी आश्वासन भी कई बार लोगों के डर को तुरंत समाप्त नहीं कर पाते. यह स्थिति हमारे समाज में सूचना के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता और कभी-कभी विवेकहीन प्रतिक्रिया को उजागर करती है.

इस पूरे प्रकरण का एक चिंताजनक पहलू यह भी है कि लोग बिना आवश्यकता के ईंधन का भंडारण करने लगे. पेट्रोल को डिब्बों या बोतलों में भरकर रखना न केवल गैरजरूरी है, बल्कि सुरक्षा की दृष्टि से भी बेहद खतरनाक है. इस तरह का व्यवहार न केवल व्यक्तिगत जोखिम बढ़ाता है, बल्कि सामूहिक संकट को भी गहरा करता है. वास्तव में, यह सामाजिक जिम्मेदारी की कमी का संकेत है. समाधान स्पष्ट है, लेकिन उसके लिए सामूहिक अनुशासन की आवश्यकता है. सबसे पहले, नागरिकों को यह समझना होगा कि हर सूचना सत्य नहीं होती. सोशल मीडिया पर प्राप्त किसी भी खबर को बिना पुष्टि के स्वीकार करना या आगे बढ़ाना स्थिति को और बिगाड़ता है. दूसरे, आवश्यकता के अनुसार ही ईंधन लेना चाहिए. यदि वाहन में पर्याप्त पेट्रोल है, तो केवल डर के कारण पंप की ओर दौड़ना समस्या को बढ़ाने जैसा है.

प्रशासन को भी चाहिए कि वह पारदर्शिता और त्वरित संचार के माध्यम से जनता का विश्वास बनाए रखे. साथ ही, अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जरूरी है, ताकि भविष्य में इस तरह की स्थितियों को रोका जा सके. कुल मिलाकर यह घटना हमें यह सिखाती है कि किसी भी व्यवस्था की सबसे बड़ी परीक्षा संकट में नहीं, बल्कि अफवाहों के समय होती है. ईंधन की कमी नहीं है, लेकिन संयम और विवेक की कमी जरूर दिखी है. यदि समाज ने इस अनुभव से सीख ली, तो भविष्य में ऐसे 'कृत्रिम संकट' पैदा होने से रोके जा सकते हैं.

पूजनीयता से समानता की ओर भारतीय नारी

सुश्रीचेतना

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता, अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का वास होता है. प्रश्न यह है कि क्या केवल पूजनीय कह देने भर से महिलाओं को वास्तव में समान अधिकार और सम्मान मिल पाया है? क्या समाज ने उन्हे समान अवसर, स्वतंत्रता और अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने का अधिकार प्रदान किया है?

> परिवर्तन की वास्तविक शुरुआत समाज के व्यापक स्तर से नहीं, बल्कि उसकी सबसे छोटी और सबसे महत्वपूर्ण इकाई—परिवारऔर स्वम से होती है. यही वह आधार है जहाँ से विचार, संस्कार और दृष्टिकोण विकसित होते हैं. अत: यह बदलाव मुझसे और मेरे अपने परिवार से प्रारंभ हो सकता है. यदि प्रत्येक परिवार अपने घर में बेटा और बेटी के बीच समान व्यवहार सुनिश्चित करे—उन्हें शिक्षा, पोषण, अवसर और निर्णय के अधिकार में समानता प्रदान करे—तो यही छोटे-छोटे प्रयास मिलकर पूरे समाज में एक सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करेंगे. जब समाज इस सत्य को स्वीकार कर लेगा कि स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं, और दोनों की समान भागीदारी से ही संतुलित एवं समग्र विकास संभव है .आइए भारत को एक महान नागरिक राष्ट्र बनाने के लिए एक साथ हुंकार करें.

यदि हम स्त्री को देवी का स्वरूप देकर उसे मंदिर की वेदी पर स्थापित कर दें, तो यह देखने में सम्मानजनक अवश्य प्रतीत होता है, परंतु वह, वहाँ से न तो अपनी इच्छा से उठ सकती है, न ही अपने विचार स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सकती है और न ही अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले सकती है. यही पितृसत्ता् का असली रूप है, जो एक अदृश्य बंधन का रूप ले लेती है, जो स्त्री की स्वतंत्रता, निर्णय, स्वायत्तता और उसके व्यक्तित्व के समुचित विकास को सीमित कर देती है. लेकिन20वीं सदी के मध्य में माँ को फिर से एक प्रेरक प्रतीक बना दिया गया, जैसे भारत माता या शक्ति और रक्षा करने वाली माँ के रूप में. बेटी के रूप में महिला को देखने से एक नई सोच शुरू हुई—बचपन से ही लड़की होने का दर्द, किशोरावस्था में डर और असुरक्षा, शादी के बाद घर छोड़ने का दुख, अकेलापन, और अपनी पहचान खोने का एहसास. फिर जब एक बेटी का जन्म होता है, तो वही दर्द और अनुभव दोबारा दोहराए जाते हैं.समय के साथ माँ का प्रतीक कम इस्तेमाल होने लगा. उसकी जगह दो नई छवियाँ सामने आईं—एक बेटी के रूप में महिला और दूसरी पत्नी (पीड़ित/संकोच) में जीने वाली महिला. इन दोनों ने महिला को केवल माँ या पत्नी के रूप में देखने के बजाय उसके अपने व्यक्तित्व और उसकी काम करने की क्षमता पर ध्यान दिया. किन्तु21वीं सदी में, इसके स्थान पर आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिला की छवि उभरती दिखाई देती है, जिसे महिला श्रम बल भागीदारी दर में वृद्धि से देखा जा सकता है. फिर भी, पितृसत्तात्मक मानसिकता उसकी स्वतंत्रता पर नए प्रकार के नियंत्रण थोपती है—जैसे उसके करियर की प्रगति, पहनावे और घरेलू निर्णयों को निशाना बनाकर.

आज़ादी के बाद हमारा संविधान महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता की बात करता है और जेंडर या सेक्स के आधार पर किसी भी तरह के भेदभाव को गलत मानता है, सिवाय कुछ प्राकृतिक अंतर के.फिर भीसबसे दुखद पहलू यह है कि देश में महिलाओं के विरुद्ध अपराधों की घटनाएँ कम नहीं हो रही हैं. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की वर्ष2023 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में महिलाओं के विरुद्ध कुल 4,48,211 मामले दर्जकिए गए, जो वर्ष2022 की तुलना में वृद्धि को दर्शाते हैं. इन अपराधों में सर्वाधिक मामलेपति या उसके संबंधियों द्वारा क्रूरता (लगभग 29.8 प्रतिशत) के हैं, जो यह स्पष्ट करते हैं कि महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित स्थान कई बार उनका अपना घर ही बन जाता है.इसी तरहपिछले पाँच दशकों में बलात्कार की घटनाएँ लगभग12 गुना बढ़ी हैं. उदाहरण के लिए, 1972 में2,562 मामलों से बढ़कर 2021 में31,677 मामले दर्ज हुए. यह बेहद चिंताजनक स्थिति है.

महिलाओं के प्रति बढ़ते ऐसे अपराध यह सवाल खड़ा करते हैं कि क्या इस प्रकार की परिस्थितियाँ वास्तव में विकास या विकसित भारत की दिशा को दर्शाती हैं. मैं स्वयं एक लड़की हूँ, और मुझे यह अनुभव होता है कि भारत की अनेक लड़कियाँ इस दोहरी सामाजिक स्थिति से गुजरती हैं. हर लड़की के अपने अनुभव होते हैं-परिवार से लेकर समाज तक, घर से लेकर कार्यस्थल तक जहाँ वे भेदभाव, संघर्ष, चुनौतियों और प्रताड़ना का सामना करती हैं. इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि स्त्री को केवल पूजनीय बनाकर ऊँचे स्थान पर स्थापित करने के बजाय उसे एक समान मानव के रूप में स्वीकार किया जाए. उसे वही अधिकार, वही अवसर और वही स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए, जो एक पुरुष को मिलती है. उसे अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं लेने की स्वतंत्रता हो तथा समाज उसकी इच्छाओं और क्षमताओं का सम्मान करे.

(सहायक प्रोफेसर एवं सामाजिक चिंतक,खरगोन)

महाकौशल की डायरी

श्रद्धांजलि सभा बन गई सियासी अखाड़ा...

अविनाश दीक्षित

विगत दिनों नरसिंहपुर में स्वतंत्रता सेनानी रानी अवंतीबाई लोधी के 168वें बलिदान दिवस पर आयोजित कांग्रेस की श्रद्धांजलि सभा अचानक सियासी अखाड़े में बदली तो स्थानीय भाजपा नेताओं को मानों एक बड़ा मुद्दा मिल गया .. हुआ भी कुछ इस तरह कि कांग्रेसी गुटबाजी को लेकर भाजपा नेताओं ने खूब चुटकियां लीं. कुछ भाजपाई शेरो शायरी तो कुछ स्थानीय लोकोक्ति के जरिये तंज कसते नजर आए. दरअसल श्रद्धांजलि सभा में भरे मंच से भाषण दे रहे कांग्रेस के विधानसभा प्रत्याशी रहे लाखन सिंह पटेल को लंबा भाषण देने से रोका गया, जिसके बाद लाखन सिंह के समर्थकों ने हंगामा करना शुरू कर दिया. बड़ी बात तो ये थी कि कांग्रेस के ही लाखन सिंह पटैल और पूर्व विधायक सुनील जायसवाल के बीच विवाद कांग्रेस के पूर्व सांसद व मुख्य अतिथि नकुल नाथ के सामने हुआ. जिसे देख नकुलनाथ भी सकते में आ गए.

राजनैतिक जानकारों की मानें तो प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी को विवाद करने और अनुशासन तोड़ने वाले नेताओं की शिकायत की गई है, अब देखना होगा कि आने वाले दिनों में

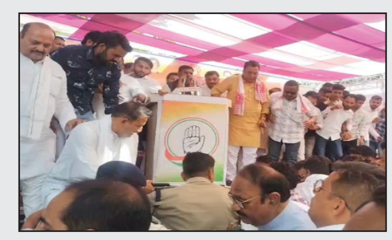

इन पर किस तरह की कार्रवाई संगठन स्तर पर सुनिश्चित की जाती है. प्रत्यक्षदर्शियों ने भी स्पष्ट किया कि यदि पुलिस बल स्थिति को नहीं संभालता तो नतीजा बेहद गंभीर सामने आता. पुलिस सूत्रों के मुताबिक पूरा विवाद छींटाकशी के चलते हुआ था. दूसरी तरफ पूरे विवाद ने कार्यक्रम की गरिमा पर भी सवाल खड़े किए. खबर है कि लाखन सिंह पटेल को बीच में ही भाषण खत्म करने की बात को उनके समर्थकों द्वारा अपमान बताया गया और निंदा की गई कि संगठन जब एक है और संगठन का ही नेता भाषण लंबा दे रहा है तो उसे व्यक्तिगत रूप से अपमानित क्यों किया गया.

पूर्व विधायक ने रेत चोरी का कर दिया लाइव प्रसारण...

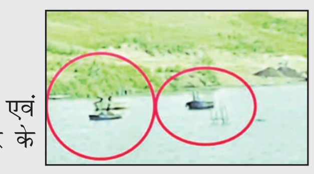

वर्तमान ग्रामीण कांग्रेस अध्यक्ष एवं जबलपुर के बरगी विधानसभा के पूर्व विधायक संजय यादव ने सत्ता पक्ष के नेताओं के साथ प्रशासनिक खेमे में खलबली मचाई तो उनको घेरने की तैयारियां राजनैतिक मैदान में शुरू होने लगीं. हुआ यूं कि जिले के चरगवां से शहपुरा जाते वक्त मां नर्मदा के मालकच्छार घाट में दिनदहाड़े रेत का उत्खनन हो रहा था कि तभी वहां पहुंचे संजय यादव ने फेसबुक लाइव शुरू किया और रेत के अवैध उत्खनन की पोल खोल कर रख दी. रेत के अवैध उत्खनन को लेकर पूर्व विधायक संजय यादव ने सोशल मीडिया में कलेक्टर के लिए भी संदेश लिखा कि साहब इस मुद्दे को गंभीरता से लें.

सर्वविदित है कि माँ नर्मदा के तटों से रेत चोरी के लिए शहपुरा, चरगवाँ, बरगी, सिलुआ, जमतरा, खिरेहनी, मालकच्छार, सिहोरा आदि क्षेत्रों के घाट सर्वाधिक बदनाम हैं. सोशल मीडिया में संजय यादव ने दो टूक कहा है कि खनिज विभाग, जिला प्रशासन के अधिकारियों की संलिप्तता के कारण धड़ल्ले से मां नर्मदा का आंचल छलनी हो रहा है इसलिए मैं आज ये लाइव चलाकर प्रमाण दे रहा हूं. प्रमाण सामने आते ही सवाल खड़े होने लगे कि आखिर कहां छिपकर बैठा है खनिज विभाग.

दोहरी भूमिका निभाते पकड़ी गई खाकी.....

पिछले दिनों जिला अदालत जबलपुर के अंदर पुलिस कर्मी अधिवक्ता का काम करते रंगे हाथों पकड़ाया तो न्यायिक व्यवस्था पर तमाम सवाल खड़े हो गये . अधिवक्ताओं ने आरोप लगाकर दो टूक कहा कि बिना अंदरुनी मिलीभगत के इस तरह की प्रक्रिया संभव नहीं है. इस कारनामे ने पूरे सिस्टम की पारदर्शिता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगा दिया है. आरोप ये लगे कि जिला एवं सत्र न्यायालय जबलपुर के कोर्ट नंबर 2 के बाहर पुलिसकर्मी श्रीकांत गुर्जर (आबकारी) और श्वेता ठाकुर ने निर्धारित जुर्माना राशि से अधिक रुपए पक्षकारों से लिए. इसके बाद वह स्वयं ही ऑनलाइन माध्यम से जुर्माना जमा किए, जो कि स्थापित प्रक्रिया के विपरीत था. आरोप ये भी लगे कि पुलिसकर्मी न सिर्फ चालान पेश कर रहे थे, बल्कि पक्षकारों से सीधे संपर्क कर पूरे केस की प्रक्रिया खुद ही संभाल रहे थे. अधिवक्ता के द्वारा पकड़े गए पुलिस कर्मी का सोशल मीडिया में वीडियो भी जमकर वायरल हुआ तो खबर एसपी तक पहुंच गई. नतीजतन चालान ड्यूटी वाले पुलिस कर्मियों की आपात बैठक बुलाई गई और उन्हें सख्त लहजे में कहा गया कि आपका जितना काम है सिर्फ उतना ही करें नहीं तो खैर नहीं होगी. उधर सोशल मीडिया में वीडियो वायरल होते ही पुलिस कर्मियों की अवैध वसूली को लेकर भी शहरवासियों द्वारा काफी तंज कसे गए . पूरे मामले ने खाकी पर दाग तो लगाया ही इसके साथ ही पुलिस की कार्यशैली को भी कटघरे में खड़ा किया.

असम में हिमंत को गोगोई की चुनौती

असम विधानसभा की 126 सीटों का चुनाव केवल एक चरण में होने जा रहा है जिसमें ढाई करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे. चुनाव क्षेत्रों के पुनर्निर्धारण की वजह से इस बार नई चुनौतियां सामने आ गई हैं. एसआईआर का भी असर देखा जाएगा. हिमंता सरकार ने अवैध भूमि कब्जे हटाए हैं व घुसपैठियों पर एक्शन लिया है. इसका परिणाम मतदान पर पड़ना स्वाभाविक है. इसके अलावा सरकार ने सीधे लाभ हस्तांतरण वाली योजनाएं ओरुनोदोयी व लखपति नैदो शुरू की हैं. जिस तरह बिहार में नीतीश सरकार ने हर महिला के खाते में 10,000 रुपये जमा कर चुनाव जीता था कुछ वैसा ही लाभ हिमंता सरकार को असम में हो सकता है. महिला वोटों का समर्थन चुनाव जिताने में बड़ी भूमिका निभाता है. बीजेपी असम की सभी सीटों पर चुनाव न लड़ते हुए कुछ सीटें एनडीए के घटक दलों असम गण परिषद व बीपीएफ के लिए छोड़ेगी. बोडो समुदाय के वोटों के लिए बीजेपी कभी यूपीपीएल तो कभी बीपीएफ के साथ गठबंधन करती रही है. असम में 6 समुदायों ने अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने की मांग की है. बीजेपी को इस संबंध में भी सोचना होगा. उत्तरी असम में आदिवासी वोट ज्यादा हैं. कांग्रेस, गौरव गोगोई के नेतृत्व में बीजेपी को चुनौती दे रही है. गौरव ने जोरहाट क्षेत्र से लोकसभा चुनाव जीता था. इस क्षेत्र में 10 विधानसभा सीटें हैं. अब विधानसभा चुनाव में उन्हें अपना दमखम दिखाना होगा. भारत जोड़ो यात्रा में गौरव गोगोई राहुल गांधी के साथ थे. उन्होंने खुद भी समय परिवर्तन-माटी बचाओ, जाति बचाओ यात्रा निकाली थी. चुनाव क्षेत्र परिसीमन, मतदाता सूची में संशोधन तथा महिला मतदाताओं के रुख का चुनाव पर प्रभाव पड़ने की संभावना है. इस विधानसभा चुनाव में असम जातीय परिषद व राइजोर दल जैसी क्षेत्रीय पार्टियां भी भाग लेंगी. कांग्रेस को उम्मीद है कि मतदाता इस बार बदलाव के लिए वोट देंगे जबकि बीजेपी मानती है कि सर्वानंद सोनोवाल के राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में जाने के बाद हिमंत बिस्वा सरमा ही असम में बीजेपी के प्रभावशाली नेता हैं जो पार्टी को विजय दिलाएंगे.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मोदी-शाह फिर ठोकेंगे ताल ममता मुक्त कैसे हो बंगाल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, देश मलेरिया मुक्त हो चुका है लेकिन बंगाल ममता मुक्त कैसे होगा? बीजेपी छटपटा रही है कि बंगाल में भगवा लहराए, क्या मोदी अपने मन की मुराद पूरी कर पाएंगे? बंगाल के लोग यदि जय जय श्रीराम कहने लगें तो उनका बेड़ा पार हो जाएगा.'

हमने कहा, 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती. बीजेपी भारी पड़े, इसके लिए सुबेंदु अधिकारी को जिम्मेदारी सौंपी गई है. बीजेपी की प्लानिंग है कि ममता बनर्जी को उनके निर्वाचन क्षेत्र में इस तरह घेरकर दबाव बनाया जाए ताकि वह चुनाव प्रचार के लिए राज्य के अन्य क्षेत्रों में जाने ही न पाएं और अपनी सीट बचाने की उधेड़बुन में लगी रहें. जिस तरह अमेरिका व इजराइल ने ईरान को निशाना बनाया है वैसे ही बीजेपी टीएमसी पर टूट पड़ेगी. मोदी, अमित शाह, योगी आदित्यनाथ, जेपी नड्डा सब मिलकर टीएमसी को दफनाने के लिए गड्डा खोद देंगे.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आपको मालूम होना चाहिए कि ओपीनियन पोल में बीजेपी के सारे मंसूबे ध्वस्त हो गए हैं और बंगाल में चौथी बार ममता सरकार बनने जा रही है. 294 सदस्यों वाली बंगाल विधानसभा में ममता के नेतृत्व वाली टीएमसी 184 से 194 सीटें हासिल करेगी वहीं बीजेपी पूरा जोर लगाने पर भी 98 से 108 सीटें जीतेंगी. 41.9 प्रतिशत लोगों ने टीएमसी के प्रति अपना समर्थन जताया है.'

हमने कहा, 'ओपीनियन पोल पर आंख मूंदकर भरोसा मत कीजिए. असली नतीजे कुछ अलग हो सकते हैं. कप के होंठों तक पहुंचने के दौरान कभी भी वह पकड़ से फिसल सकता है. अंग्रेजी में कहते हैं- देयर आर मैनी ए स्लिप्स बिटवीन ए कप एंड लिप्स ! बंगाल का उद्धार डबल इंजन सरकार कर सकती है. केंद्र व राज्य दोनों में एक ही पार्टी रहने से फर्क पड़ेगा.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह भ्रम है. ममता के कदम मजबूत हैं. वहां मोदी का मैजिक चल पाना मुश्किल है. वैसे वह रवींद्रनाथ टैगोर जैसी लंबी दाढ़ी बढ़ाकर अपनी चुनाव सभा में ललकार कर कह सकते हैं- दीदी ओ दीदी! दूसरी ओर मुस्लिम वोट भर देंगे ममता की झोली!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12210

- डॉ. सागर खादीवाला

1		2		3	■	4	
	■		■	5			■
	■	6			■	7	8
■	9	■	■	■	10	■	
11		12	13			14	■
■	15			■	16		17
18			■	19	■	20	
	■	■	21			■	

बाएं से दाएं

1. संगीत का रचनाकार 4. गायब होना, नाश, अभाव 5. वह राक्षस जिसने स्वर्ण हिरन बनकर सीताजी को धोखा दिया था 6. फलयुक्त होना, फल देना 7. अभिनेता, एक जाति 11. रेलगाड़ी 15. केला, एक हिरन (सं.) 16. रमणी, राधिका की एक सखी 18. चंद्रमा, कपूर 20. मामा की पत्नी 21. जो सुनने में अच्छा लगे, मीठा, जो क्लेशप्रद न हो

ऊपर से नीचे

1. दुनिया, जगत, गृहस्थी 2. ओर, बगल, पक्ष (उर्दू) 3. रमण कराना, अनुकूल बनाना 4. आंख, नयन 8. बूंद के टपकने का शब्द आकाशगंगा (उर्दू) 9. 10. दक्षिण भारत की एक जाति का नाम, इस जाति के लोगों की भाषा 12. तमगा 13. स्थान, जगह, थल के नीचे का तल 14. नीलिमा 17. भवन निर्माण का काम (उर्दू) 18. इंद्र की पत्नी 19. धार्मिक जीवन बिताने वाला संत व्यक्ति, मुनि

Solution 12209

हि	मा	च	ल	■	इ	ला	ज
ल	■	क	ह	ना	■	भ	ला
ना	ग	वा	र	■	क	■	व
■	ह	■	■	वा	र	दा	त
प	रा	म	र्श	दा	ता	■	न
छा	ना	■	■	खि	र	ना	■
ड़	■	बं	ग	ला	■	■	नो
ना	लं	दा	■	फी	ल	वा	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सामाजिककार्यो मेंख्याति मिलेगी, नई योजनाओं में परामर्श होगा, वर्ष के मध्य में भूमि भवन आदि के मामलों मेंसफलता मिलेगी, वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक क्षेत्र में विवाद होगा, व्यापार व्यवसाय में भागदौड़ करना होगी, निकट संबंधी के कारण मानसिक तनाव रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के व्यापार में भागदौड़ रहेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक क्षेत्र में विवाद होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को निकट संबंधी के कारण मानसिक तनाव मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यापार में भागदौड़ रहेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आपसी तनाव रह सकता है, सिंह राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन संबंधी कार्यो में सफलता मिलेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को कम मेहनत में अच्छी सफलता के योग है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिये बालक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. बालक सुन्दर सुशील मिलनसार होगा. बाग बगीचों भूमि भवन मकानआदि का अच्छा सुख प्राप्त करेगा. कृषि एवं व्यवसाय दोनों क्षेत्रों में उन्नति करेगा. योजनाबद्ध तरीके से काम करेगा. न्यायप्रिय होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

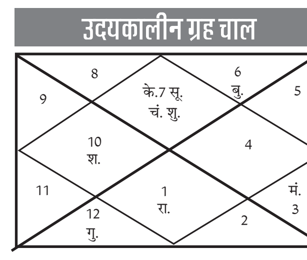

पंचांग

रा.मि. 06 संवत् 2083 चैत्र शुक्ल नवमीं भृगुवासरे दिन 12/2, पुनर्वसु नक्षत्रे शाम 5/12, अतिगण्ड योगे रात 11/54, कौलव करणे सू.उ. 5/56, सू.अ. 6/4, चन्द्रचार मिथुन दिन 11/33 से कर्क, पर्व- श्रीराम नवमीं व्रत, जवारे विसर्जन, शु.रा. 4,6,7,10,11,2 अ.रा. 5,8,9,12,1,3 शुभांक- 6,8,2.

मेष- पारिवारिक जीवन में सुख एवं आनन्द रहेगा. पद की प्राप्ति होगी. अधिकारियों से मेल तरक्की में सहायक होगा. साहसिक प्रयासों में यश मिलेगा.

वृषभ- नये संबंधों में लाभ होगा. स्वास्थ्य में सुधार होगा, प्रिय संदेश प्राप्त होगा. यश मिलेगा. धन लाभ होगा. आजीविका के संबंधों में सफलता मिलेगी.

मिथुन- कोर्ट कचहरी आदि के कार्यो में सफलता प्राप्त होगी. अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा. यात्रा आदि में उठाईगीरों से सावधानी रखें.

कर्क- अचानक खर्च आ सकता है. पारिवारिक विवाद से पीड़ा होगी. दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार मिल सकता है. मान सम्मान बढ़ेगा.

सिंह- नवीन मित्रों का समागम होगा महत्वपूर्ण कार्यो पर विचार होगा. व्ययभार की अधिकता रह सकती है. मान सम्मान में वृद्धि होगी.

कन्या- राजनैतिक क्षेत्र में विस्तार होगा. नौकर चाकरों तथा सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. व्यर्थ के विवादों से बचें.

तुला- अधिकार के क्षेत्र में वृद्धि होगी. नवीन योजनाओं में खर्च अधिक होगा. संतान आदि के कार्य में सफलता, कारोबारी यात्रा होगी.

वृश्चिक- दूसरों पर अत्याधिक विश्वास करना नुकसानदायक रहेगा. धन प्राप्ति के मार्ग सामने आयेंगे, भावनात्मक संबंधों में मधुरता बढ़ेगी.

धनु- भाग्यवर्धक शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. आर्थिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी. यश मिलेगा.

मकर- मित्रों एवं निकट संबंधियों का कार्य बनने का योग है. स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी. तीखी बातें करने से अपनों को नाराज कर लेंगे.

कुम्भ- उदर एवं विकार, रक्त विकार आदि से पीड़ा हो सकती है. सोच विचार कर निर्णय लेना हितकर रहेगा. कानूनी मामलों में धैर्य से काम लें.

मीन- कोर्ट कचहरी आदि से संबंधित कार्य बनने का योग है. स्वास्थ्य चिन्ता रह सकती है. धार्मिक आयोजनों में शामिल होने से खुशी होगी.

व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल नवमीं को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से चना, गुड़, खांड, गेहूॅ, सरसों, तिल,तेल, अलसी, अरंडी, के भाव में मंदी होगी. पिपरमेंट के भाव में तेजी का रूख रहेगा. जौ, गेहूॅ, चना, केभाव में मंदी होकर तेजी का योग है. भाग्यांक 1476 है.

SUDOKU 7342

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7341

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1